Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

अध्ययन और अध्यापन कार्य में शैक्षणिक पुस्तकालयों की भूमिका (रीवा जिले के विशेष संदर्भ में)

शोध–निर्देषक
डॉ. रेखा मर्सकोले
सहायक प्राध्यापक
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
आई.ई.एस. विश्वविद्यालय, भोपाल
जिला–भोपाल (म.प्र.)

शोधार्थी
सबीहा बेगम
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
आई.ई.एस. विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रस्तावना–

शैक्षणिक पुस्तकालयों की स्थिति एवं ज्ञान तथा सूचनाओं के स्रोत के रूप में पुस्तकालयों में सूचना सुविधाओं की क्रियाशीलता का अध्ययन वर्तमान परिवेश में इसलिए समीचीन है कि शिक्षा में पुस्तकालय में सूचना सुविधाओं की प्रक्रिया किस सीमा तक छात्रों तथा अध्येताओं के लिए सूचना तथा तथ्यों के संग्रहण में उपयोगी सिद्ध हो रही है। सूचना सुविधाओं द्वारा पुस्तकालयीन व्यवस्था के विकास में किस सीमा तक प्रयासरत हैं, इसका विश्लेषण प्रस्तुत शोध के लिए महत्वपूर्ण है।

शैक्षणिक पुस्तकालय समाज के अपरिहार्य स्तंभ हैं, जो शैक्षिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और सूचनात्मक आवश्यकताओं को संबोधित करने वाली विभिन्न भूमिकाओं को पूरा करते हैं। वे पुस्तकों के मात्र भण्डार से कहीं अधिक हैं, पुस्तकालय बौद्धिक विकास और पीढ़ियों के बीच ज्ञान के प्रसार के केंद्र हैं। अपने मूल में, शैक्षणिक पुस्तकालय ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के अभिलेखागार को बनाए रखते हुए सामूहिक मानव ज्ञान को संरक्षित करते हैं, साथ ही साथ समकालीन संसाधनों तक पहुँच प्रदान करते हैं जो आबादी की

लगातार बदलती जरूरतों को पूरा करते हैं। उदाहरण के लिए, पुस्तकालय पारंपरिक प्रिंट मीडिया, डिजिटल सामग्री और इंटरैक्टिव शिक्षण उपकरणों तक फैले संसाधनों को क्यूरेट करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे तेजी से डिजिटल होती दुनिया में प्रासंगिक बने रहे।

पुस्तकालय का महत्व–

पुस्तकालयों की स्थापना सम्बन्धित संस्थान की शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए की जाती है। अतः शैक्षिक पुस्तकालयों के कार्य तथा उद्देश्य के पहले शिक्षा, विशेषतः शिक्षा के उद्देश्यों की चर्चा करना आवश्यक है। शिक्षा के उद्देश्यों के बारे में अनेक स्थानों की चर्चा हुई है। ऑल इण्डिया फेडरेशन ऑफ यूनिवर्सिटी एण्ड कॉलेज ऑर्गेनाइजेशन्स विल्सन और टाउबर, कर्न एलेक्जेण्डर आदि ने शिक्षा के उद्देश्यों के बारे में विस्तृत रूप से लिखा है। इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि शैक्षणिक पुस्तकालय के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. छात्रों की कल्पना और विश्लेषणात्मक शक्ति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने की शिक्षा देना।
2. कला, विज्ञान तथा वाणिज्य के क्षेत्र में विश्व स्तर पर होने वाले विकास से छात्रों को परिचित कराना।
3. छात्रों में आत्मनिर्भरता का विकास करना।
4. समग्र रूप में ज्ञान की व्याख्या करना।
5. शोध, प्रकाशन तथा शिक्षा का विस्तार करना।

शिक्षा में शैक्षणिक पुस्तकालय का स्थान सर्वोपरि है। पुस्तकालय वह स्थान है, जहाँ विविध प्रकार के ज्ञान, सूचनाओं, सेवाओं, स्रोतों आदि का संग्रह रहता है। पुस्तकालय शब्द अँग्रेजी के लाइब्रेरी शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। लाइब्रेरी शब्द की उत्पत्ति लैटिन लाइबर से

हुई है, जिसका अर्थ है—पुस्तक पुस्तकालय का इतिहास लेखन प्रणाली, पुस्तकों और दस्तावेज के स्वरूप को संरक्षित रखने की पद्धतियों और प्रणालियों से जुड़ा है। पुस्तकालय शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है—पुस्तक+आलय। जिसमें लेखक के भाव संगृहीत हों, उसे पुस्तक कहा जाता है और आलय का आशय स्थान या घर से होता है। इस प्रकार पुस्तकालय उस स्थान को कहते हैं जहाँ पर अध्ययन सामग्री (पुस्तकें, फिल्म पत्र—पत्रिकाएँ, मानचित्र, हस्तलिखित ग्रन्थ, ग्रामोफोन रिकॉर्ड एवं अन्य पठनीय सामग्री) संगृहीत होती हैं और इन सामग्रियों की सुरक्षा की जाती है। पुस्तकों से भरी अलमारी अथवा पुस्तक विक्रेता के पास पुस्तकों का संग्रह पुस्तकालय नहीं कहलाता है, क्योंकि वहाँ पर पुस्तकों को व्यावसायिक दृष्टि से रखा जाता है।

शोध प्रविधि—

शोधार्थी अपने शोध पत्र को पूर्ण करने के लिए वैज्ञानिक रूप से मान्य सामाजिक अनुसंधान की जिन विधियों का प्रयोग किया है, उनमें से प्रमुख इस तरह से हैं—अवलोकन, मूल्यांकन, साक्षात्कार, प्रश्नावली, अनुसूची आदि। इसके बाद इनका मान्य वैज्ञानिक तरीके से सारणीयन, वर्गीकरण, निष्कर्षीकरण और समान्यीकरण किया गया है।

नमूना चयन—

रीवा जिले में स्थित शासकीय महाविद्यालय—	10
ग्रन्थपाल—	10

सारणी क्रमांक 1

पुस्तकालय के संग्रह सम्बन्धी मत

क्र.	संग्रह सम्बन्धी मत	संख्या	प्रतिशत
1	मुद्रित संग्रह	6	60
2	इलेक्ट्रानिक	2	20
3	मिश्रित	2	20
4	स्पष्ट नहीं है	0	0
	योग	**10**	**100.00**

स्रोत–व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर।

उपरोक्त सारणी के माध्यम से जिला रीवा के अध्ययन किए गए 10 महाविद्यालयों के ग्रन्थपालों से पुस्तकालय में उपलब्ध संग्रहों के विषयक जानकारी चाही गयी है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अध्ययनरत 60 प्रतिशत ग्रन्थपालों ने माना कि उनके महाविद्यालय के पुस्तकालय में अधिकांश मुद्रित सामग्री उपलब्ध है, 20.00 प्रतिशत ग्रन्थपाल अपने पुस्तकालय में इलेक्ट्रानिक सामग्री की उपलब्धता भी स्वीकार करते हैं, इसी प्रकार 20 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार उनके महाविद्यालय के पुस्तकालय में मुद्रित एवं इलेक्ट्रानिक दोनों प्रकार की अध्ययन सामग्री मौजूद है, अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अध्ययनरत अधिकांश महाविद्यालयों में मुद्रित संग्रह उपलब्ध है।

सारणी क्रमांक 2

पुस्तकालय में पुस्तक का संग्रह सम्बन्धी विवरण

क्र.	संग्रह सम्बन्धी मत	संख्या	प्रतिशत
1	0—20000	3	30
2	20000—40000	2	20
3	40000—60000	1	10
4	60000—80000	1	10
5	80000—100000	1	10
6	100000—150000	2	20
	योग	**10**	**100.00**

स्रोत—व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर।

उपरोक्त सारणी के माध्यम से जिला रीवा के 10 महाविद्यालयों के ग्रन्थपालों से पुस्तकालय में पुस्तक संग्रह की जानकारी चाही गयी है। सारणी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि 30 प्रतिशत महाविद्यालयों में पुस्तकों की संख्या लगभग दस हजार है, 20 प्रतिशत महाविद्यालयों में बीस से चालीस हजार के मध्य संख्या पाई गयी है। इसी प्रकार 10 प्रतिशत महाविद्यालयों में चालीस हजार से साठ हजार के मध्य इसी प्रकार 10 प्रतिशत महाविद्यालयों में पुस्तकों की संख्या साठ हजार से अस्सी हजार से अधिक पाई गयी है। इसी प्रकार 10 प्रतिशत महाविद्यालयों में पुस्तकों की संख्या अस्सी हजार से एक लाख अधिक पाई गई, तथा

20 प्रतिशत महाविद्यालयों में पुस्तकों की संख्या एक लाख से एक लाख पचास हजार से अधिक पाई गई।

सारणी से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अध्ययन किए गए अधिकांश महाविद्यालयों में पुस्तकों की संख्या बीस हजार के मध्य पायी गयी है।

सारणी क्रमांक 3

पुस्तकालय में छात्रों हेतु पुस्तकों की उपलब्धता के सम्बन्ध में संतुष्टि का स्तर

क्र.	संग्रह सम्बन्धी मत	संख्या	प्रतिशत
1	संतोषजनक	7	70
2	असंतोषजनक	3	30
	योग	**10**	**100.00**

स्रोत–व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर।

अध्ययन किए गए जिला रीवा के 10 महाविद्यालयों के ग्रन्थपालों से पुस्तकालय में छात्रों हेतु पुस्तकों की उपलब्धता के सम्बन्ध में संतुष्टि के स्तर को ज्ञात किया गया है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 70 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार पुस्तकों की उपलब्धता संतोषजनक है, जबकि 30 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार पुस्तकों की उपलब्धता असंतोषजनक है। अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अध्ययनरत अधिकांश महाविद्यालयों में पुस्तकों की उपलब्धता का स्तर संतोषजनक है।

Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि प्रतिवर्ष नवीन पुस्तकों के क्रय के सम्बन्ध में महाविद्यालय के पास निजी स्रोत/वित्त पोषण की कोई व्यवस्था नहीं है। अधिकांश महाविद्यालय में पुस्तकों के क्रय के लिए शासन/यू.जी.सी. द्वारा किए गए वित्त पोषण से ही पुस्तकें क्रय की गई हैं, महाविद्यालयों में पुस्तकों के क्रय हेतु पृथक से आरक्षित राशि की व्यवस्था नहीं है, परिणामस्वरूप छात्र अनुपात में छात्रोपयोगी पुस्तकों की उपलब्धता संतोषजनक नहीं पायी गयी।

सारणी क्रमांक 4

पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकें छात्र संख्या के

अनुपात में पर्याप्त होने सम्बन्धी मत

क्र.	संग्रह सम्बन्धी मत	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	4	40
2	नहीं	6	60
	योग	**10**	**100.00**

स्रोत–व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर।

छात्र संख्या के अनुपात में पुस्तकों की उपलब्धता के सम्बन्ध में महाविद्यालय प्रबन्धन के प्रयास संतोषप्रद नहीं पाए गए। कई महाविद्यालयों के ग्रन्थपालों ने छात्रों हेतु पुस्तक निर्गमन की व्यवस्था रोटेशन के आधार पर किए जाने की जानकारी दी। अधिकांश महाविद्यालयों ने स्थान की समस्या, पुस्तकों के संघारण और संरक्षण की व्यवस्था न होने को भी छात्र संख्या के अनुपात में पुस्तकों की अनुपलब्धता का कारण बताया।

अध्ययन किए गए जिला रीवा के 10 महाविद्यालयों के ग्रन्थपालों से पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकें छात्र संख्या के अनुपात में पर्याप्त होने सम्बन्धी जानकारी चाही गयी है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 40 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार उनके महाविद्यालय में पुस्तकों की संख्या छात्रों के अनुरूप है, जबकि 60 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार उनके पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकें छात्र संख्या के अनुपात में पर्याप्त नहीं है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अध्ययनरत अधिकांश महाविद्यालयों में पुस्तकों की संख्या पर्याप्त नहीं है।

सारणी क्रमांक 5

अध्ययन एवं अध्यापन कार्य हेतु पुस्तकालय की भूमिका सम्बन्धी मत

क्र.	मत	संख्या	प्रतिशत
1	अति आवश्यक	07	70.00
2	आवश्यक	01	10.00
3.	सामान्य	02	20.00
4.	कोई भूमिका नहीं	00	00
	योग	**10**	**100.00**

स्रोत–व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर।

उपरोक्त सारणी के माध्यम से जिला रीवा के अध्ययन किए गए 10 महाविद्यालयों के ग्रन्थपालों से अध्ययन एवं अध्यापन कार्य में पुस्तकालय की भूमिका सम्बन्धी प्रश्न किया गया है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 70.00 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार अध्ययन

एवं अध्यापन कार्य हेतु पुस्तकालय अति आवश्यक होता है, 10.00 प्रतिशत ग्रन्थपालो ने माना कि पुस्तकालय की भूमिका आवश्यक होती है, 20.00 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार पुस्तकालय की भूमिका अध्ययन हेतु सामान्य होती है। अतः सारणी से स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में अध्ययन एवं अध्यापन कार्य में पुस्तकालय अपनी महत्ी भूमिका निभा रहा है।

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

सारणी क्रमांक 6

पुस्तकालय के उपकरण आदि का संग्रह मानक के अनुसार सम्बन्धी मत

क्र.	संग्रह सम्बन्धी मत	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	2	20
2	नहीं	8	80
	योग	**10**	**100.00**

स्रोत–व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर।

महाविद्यालयों में पुस्तकों के क्रय हेतु निर्धारित प्रक्रिया अपनाए जाने की जानकारी दी गई और अध्ययन के लिए चयनित महाविद्यालयों में पुस्तक क्रय निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार ही किया जाता है, किन्तु पुस्तकों की आपूर्ति हेतु प्रकाशनों के चयन में विविधता का अभाव देखा गया। पुस्तकों की आपूर्ति हेतु आदेश जारी किए जाने का मानक आपूर्तिकर्ता प्रकाशकों द्वारा प्रस्तावित छूट ही होता है। इसके अतिरिक्त महाविद्यालयों में पाठ्यपुस्तकों के क्रय पर अधिक फोकस किया जाता है, संदर्भ ग्रन्थों के मंगाने की प्रवृति कम देखी गयी।

उपरोक्त सारणी के माध्यम से जिला रीवा के अध्ययन किए गए 10 महाविद्यालयों के ग्रन्थपालों से पुस्तकालय के उपकरण आदि का संग्रह मानक के अनुसार सम्बन्धी प्रश्न किया गया है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अध्ययनरत 20 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार उनके पुस्तकालय में उपकरण आदि का संग्रह मानक के अनुसार है, जबकि 80 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार उपकरण आदि का संग्रह मानक के अनुसार नहीं है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अध्ययनरत अधिकांश महाविद्यालयों में उपकरण आदि का संग्रह मानक के अनुसार नहीं है।

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

सारणी क्रमांक 7

पुस्तकालय में ओपेन एक्सेस की सुविधा सम्बन्धी मत

क्र.	सुविधा सम्बन्धी मत	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	5	50
2	नहीं	5	50
	योग	**10**	**100.00**

स्रोत–व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर।

उपरोक्त सारणी के माध्यम से जिला रीवा के अध्ययन किए गए 10 महाविद्यालयों के ग्रन्थपालों से पुस्तकालय में ओपेन एक्सेस सुविधा की जानकारी चाही गयी है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अध्ययन किए गए 50 प्रतिशत महाविद्यालयों में ओपेन एक्सेस सुविधा उपलब्ध है, 50 प्रतिशत महाविद्यालयों के पुस्तकालयों में वर्तमान में ओपेन एक्सेसे सुविधा उपलब्ध नहीं है।

इस प्रकार विद्यार्थियों को पुस्तकों के निर्गमन में उनकी रुचि या चयन के स्थान पर महाविद्यालयों में पुस्तकों की उपलब्धता को वरीयता दी जाती है। अधिकांश महाविद्यालयों में छात्रों के लिए उचित बैठक व्यवस्था का अभाव देखा गया, जिसके कारण ओपेन एक्सेस की सुविधा नहीं देखी गयी। पुस्तकों के वितरण के मामले में छात्र/छात्राओं को पुस्तकों की उपलब्धता तथा प्रदायकर्ता की इच्छा पर निर्भर होना पड़ता है।

सारणी क्रमांक 8

पुस्तकालय के लिए पुस्तकों/पत्रिकाओं का चयन करने सम्बन्धी मत

क्र.	चयन सम्बन्धी मत	संख्या	प्रतिशत
1	पुस्तकालय समिति	8	80
2	ग्रंथपाल की सलाह से	2	20
3	उपयोगकर्ता/छात्र की सलाह से	00	00
	योग	**10**	**100.00**

स्रोत–व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर।

रीवा जिले के चयनित शासकीय महाविद्यालय में कैट लांगिग, आटोमेशन के साथ–साथ पुस्तकालय प्रबन्धन से सम्बन्धित आधुनिक उपादानों का सर्वथा अभाव देखा गया। पुस्तकों के रख–रखाव के लिए आवश्यक संसाधन जैसे काम्पैक्टर्स बुक सेल्फ, कुब डिसप्ले, मल्टी मीडिया टेबल, स्टडी कैरेल्स, लाइब्रेरी स्टूल्स, पीरियाडिकल स्टैण्ड जैसे आवश्यक उपकरणों का अभाव पाया गया। अधिकांश पुस्तकालयों में पाठकों हेतु बैठक व्यवस्था एवं इसके लिए आवश्यक सुविधाओं की कमी देखी गयी। कुछ ही संस्थाओं में उपलब्ध सुविधाएँ एवं संसाधन मानकों के अनुरूप पाए गए।

अध्ययन किए गए जिला रीवा के 10 महाविद्यालयों के ग्रन्थपालों से पुस्तकालय हेतु पुस्तकों/पत्रिकाओं के चयन में अहम भूमिका किसकी रहती है, सम्बन्धी प्रश्न किया गया है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 80 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार पुस्तकालय समिति यह निर्णय लेती है कि पुस्तकालय हेतु कौन सी पुस्तकों का क्रय करना है, 20 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार पुस्तकालयाध्यक्ष की सलाह से पुस्तकों का चयन किया जाता

है। उपरोक्त सारणी से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अध्ययन किए गए अधिकांश महाविद्यालयों में पुस्तकों का चयन पुस्तकालय समिति करती है।

सारणी क्रमांक 9

पुस्तकालय के लिए पुस्तकें प्राप्त करने सम्बन्धी मत

क्र.	पुस्तकें प्राप्त करने सम्बन्धी मत	संख्या	प्रतिशत
1	प्रकाशकों से	7	70
2	प्रत्यक्ष एजेण्ट द्वारा	0	0
3	बुक सेलर/स्थानीय विक्रेता	3	30
	योग	**90**	**100.00**

स्रोत–व्यक्तिगत सर्वेक्षण के आधार पर।

प्रत्येक चयनित महाविद्यालय में पुस्तकालय समिति के गठन होने की सूचना प्राप्त हुयी, किन्तु समिति महाविद्यालय में गंगाए जाने हेतु पुस्तकों की सूची तैयार करती है तथा सूची अनुसार पुस्तकों के क्रय किए जाने की अनुशंसा करती है। पुस्तकालयों में पुस्तकें क्रय किए जाने की प्रक्रिया में उपयोगकर्ता/छात्रों की रुचि एवं उनके चयन के लिए अवसर नगण्य पाए गए। पुस्तकें मंगाने हेतु विद्यार्थियों की आवश्यकता एवं उनके परामर्श लेने की कोई व्यवस्था पुस्तकालयों में नहीं देखी गयी।

उपरोक्त सारणी के माध्यम से जिला रीवा के अध्ययन किए गए 10 महाविद्यालयों के ग्रन्थपालों से पुस्तकालय में पुस्तकों के प्राप्त होने की जानकारी चाही गयी है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 70 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार पुस्तकालय में पुस्तकें सीधे

प्रकाशकों के द्वारा, तथा 30 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार बुक सेलर एवं स्थानीय विक्रेता द्वारा पुस्तकें प्राप्त होती हैं। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अध्ययन किए गए अधिकांश महाविद्यालयों में पुस्तकें प्रकाशकों द्वारा प्राप्त होती है।

निष्कर्ष–

अध्ययनरत 60 प्रतिशत ग्रन्थपालों ने माना कि उनके महाविद्यालय के पुस्तकालय में अधिकांश मुद्रित सामग्री उपलब्ध है, 20.00 प्रतिशत ग्रन्थपाल अपने पुस्तकालय में इलेक्ट्रानिक सामग्री की उपलब्धता भी स्वीकार करते हैं, इसी प्रकार 20 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार उनके महाविद्यालय के पुस्तकालय में मुद्रित एवं इलेक्ट्रानिक दोनों प्रकार की अध्ययन सामग्री मौजूद है, अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अध्ययनरत अधिकांश महाविद्यालयों में मुद्रित संग्रह उपलब्ध है।

30 प्रतिशत महाविद्यालयों में पुस्तकों की संख्या लगभग दस हजार है, 20 प्रतिशत महाविद्यालयों में बीस से चालीस हजार के मध्य संख्या पाई गयी है। इसी प्रकार 10 प्रतिशत महाविद्यालयों में चालीस हजार से साठ हजार के मध्य इसी प्रकार 10 प्रतिशत महाविद्यालयों में पुस्तकों की संख्या साठ हजार से अस्सी हजार से अधिक पाई गयी है। इसी प्रकार 10 प्रतिशत महाविद्यालयों में पुस्तकों की संख्या अस्सी हजार से एक लाख अधिक पाई गई, तथा 20 प्रतिशत महाविद्यालयों में पुस्तकों की संख्या एक लाख से एक लाख पचास हजार से अधिक पाई गई।

जिला रीवा के 10 महाविद्यालयों के ग्रन्थपालों से पुस्तकालय में छात्रों हेतु पुस्तकों की उपलब्धता के सम्बन्ध में संतुष्टि के स्तर को ज्ञात किया गया है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 70 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार पुस्तकों की उपलब्धता संतोषजनक है, जबकि 30 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार पुस्तकों की उपलब्धता असंतोषजनक है।

अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि प्रतिवर्ष नवीन पुस्तकों के क्रय के सम्बन्ध में महाविद्यालय के पास निजी स्रोत/वित्त पोषण की कोई व्यवस्था नहीं है। अधिकांश महाविद्यालय में पुस्तकों के क्रय के लिए शासन/यू.जी.सी. द्वारा किए गए वित्त पोषण से ही पुस्तकें क्रय की गई हैं, महाविद्यालयों में पुस्तकों के क्रय हेतु पृथक से आरक्षित राशि की व्यवस्था नहीं है, परिणामस्वरूप छात्र अनुपात में छात्रोपयोगी पुस्तकों की उपलब्धता संतोषजनक नहीं पायी गयी।

छात्र संख्या के अनुपात में पुस्तकों की उपलब्धता के सम्बन्ध में महाविद्यालय प्रबन्धन के प्रयास संतोषप्रद नहीं पाए गए। कई महाविद्यालयों के ग्रन्थपालों ने छात्रों हेतु पुस्तक निर्गमन की व्यवस्था रोटेशन के आधार पर किए जाने की जानकारी दी। अधिकांश महाविद्यालयों ने स्थान की समस्या, पुस्तकों के संधारण और संरक्षण की व्यवस्था न होने को भी छात्र संख्या के अनुपात में पुस्तकों की अनुपलब्धता का कारण बताया।

40 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार उनके महाविद्यालय में पुस्तकों की संख्या छात्रों के अनुरूप है, जबकि 60 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार उनके पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकें छात्र संख्या के अनुपात में पर्याप्त नहीं है।

70.00 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार अध्ययन एवं अध्यापन कार्य हेतु पुस्तकालय अति आवश्यक होता है, 10.00 प्रतिशत ग्रन्थपालो ने माना कि पुस्तकालय की भूमिका आवश्यक होती है, 20.00 प्रतिशत ग्रन्थपालों के अनुसार पुस्तकालय की भूमिका अध्ययन हेतु सामान्य होती है।

महाविद्यालयों में पुस्तकों के क्रय हेतु निर्धारित प्रक्रिया अपनाए जाने की जानकारी दी गई और अध्ययन के लिए चयनित महाविद्यालयों में पुस्तक क्रय निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार ही किया जाता है, किन्तु पुस्तकों की आपूर्ति हेतु प्रकाशनों के चयन में विविधता का अभाव देखा गया। पुस्तकों की आपूर्ति हेतु आदेश जारी किए जाने का मानक आपूर्तिकर्ता प्रकाशकों द्वारा

प्रस्तावित छूट ही होता है। इसके अतिरिक्त महाविद्यालयों में पाठ्यपुस्तकों के क्रय पर अधिक फोकस किया जाता है, संदर्भ ग्रन्थों के मंगाने की प्रवृति कम देखी गयी।

संदर्भ–

- ब्रायमन, ए. (2016). सामाजिक अनुसंधान विधियाँ, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- क्रेसवेल, जेडब्ल्यू, और प्लानो क्लार्क, वीएल (2018)। मिश्रित विधि अनुसंधान का डिजाइन और संचालन। एसएजीईप्रकाशन।
- डेनजिन, एन.के., और लिंकन, वाई.एस. (2018)। गुणात्मक अनुसंधान की एसएजीईपुस्तिका। एसएजीईप्रकाशन।
- पैटन, एमक्यू (2015)। गुणात्मक शोध और मूल्यांकन विधियाँः सिद्धांत और व्यवहार का एकीकरण। एसएजीईप्रकाशन।
- डिलमैन, डीए, स्मिथ, जेडी, और क्रिश्चियन, एलएम (2014)। इंटरनेट, फोन, मेल और मिक्स्ड–मोड सर्वेक्षणः टेलर्ड डिजाइन विधि। विले।
- फ्लिक, यू. (2017). गुणात्मक डेटा संग्रह की सेज हैंडबुक। एसएजीईप्रकाशन।
- यिन, आर.के. (2018)। केस स्टडी रिसर्च और एप्लीकेशनः डिजाइन और तरीके। एसएजीईप्रकाशन।
- बुरुगा, बी.ए., एट अल. (2024)। युगांडा में शैक्षणिक पुस्तकालयों में इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधनों के उपयोग के लिए चालकों और बाधाओं का व्यापक मूल्यांकन।
- धीमान, बी. (2021). कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के शोधार्थियों द्वारा ई–संसाधनों का उपयोगः एक केस स्टडी।
- मधुसूदन, एम. (2010)। कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के शोधार्थियों द्वारा इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का उपयोग।
- वीर, आर., और पांडा, एस. (2021). महामारी अवधि के दौरान संसाधनों के उपयोग के आँकड़ेः चंडीगढ़ विश्वविद्यालय पुस्तकालय का एक केस स्टडी।

- उमाप, एम. एम., और जानी, आर. (2024)। इंजीनियरिंग कॉलेज पुस्तकालयों में ई–संसाधन प्रबंधन और प्रबंधन चुनौतियों का एक अध्ययन। शैक्षिक प्रशासनः सिद्धांत और अभ्यास, 30(5), 4982–4990।

- मोगा का, जे एम (2024)। केन्या के कि सिई काउंटी में चयनित शैक्षणिक पुस्तकालयों में स्नातकोत्तर छात्रों द्वारा इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का उपयोग (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, कि सिई विश्वविद्यालय)।

- पांडा, एस. (2024). अकादमिक पुस्तकालयों में ई–संसाधन उपयोग सांख्यिकी का अध्ययन क्यों आवश्यक है? एक लाइब्रेरियन के दृष्टिकोण से। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंफॉर्मेशन स्टडीज एंड लाइब्रेरीज, 9(1)।

- बुरुगा, बी.ए., गुमा, ए., और इजारुकु, आर. (2024)।स्वोट विश्लेषण का उपयोग करके युगांडा में शैक्षणिक पुस्तकालयों में इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधनों के उपयोग के लिए चालकों और बाधाओं का व्यापक मूल्यांकन।